International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 7 Issue 12, December 2017
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

''महादेवी जी की सौन्दर्यानुभूति''

MkO jk/kk Hkkj}kt
vflLVV ikQlj] fgUnh
jktdh; Lukrdkrj egkfo|ky;] Qrgkckn] vkxjkA

lkjk'k

Nk;kokknh dko;/kkjk dh ey lonuk lkn;kuHkfr jgh gA Nk;kokdh dfo;k u idfr dk db :ik e n[kk gA l{e lkUn; vkj jgL;kuHkfrxr lkUn; d fo"k; e egknoh oek dh LorU= vo/kkj.kk jgh gA l{e lkUn; d lkfr vkxg rFkk olukUe[kh LFky lkUn; d lkfr fodk.k mud xhrk e LlkV :lk l lkfjyf{kr gkrk gA mudh ;g lkUn; nfV Nk;kokdh ;x dh fodflr lkUn; pruk l mRlkUu nfV gA Nk;kokdh ;x&pruk u okLukUe[kh LFky lkUn; d fo#) fonkg fd;k gA LlkV g fd dfof;=h dh lkUn;kuHkfr e[;r% Hkko txr l lEc) g] vkRefuB g vkj vUrtxr dh dYlkukvk l ,dkdkj gk xb gA dk0; dk fp=e; rFkk fp= dk dk0;e; Lohdkj djrh gA egknoh th dk0;xr vuHkfr dk dfo dh vkRe dgkuh Hkh Lohdkj djrh gA lkUn; dk ;g Nk;kdu mudh Nk;kofRr l lkHkkfor gA lkUn;kuHkfr d ifr egknoh oek dh vo/kkj.kk vkfLrd(vk/;kfRed vkj jgL;kRed gA mudh lkUn;kuHkfr vkRefuB g(o LFky lkUn; d fo:) fonkg gA

cht 'kCn &1-lkUn;kuHkfr 2-ey lonuk 3-dk0;xr vuHkfr 4-jgL;kuHkfr 5-Hkko&txr 6-l{e&lkUn; 7-LFky lkUn; A

भूमिका– सौन्दर्य वह दिव्य अनुभूति है जो हमें तर्क और तृष्णा के बन्धन से आजाद कर सांसारिक जीवन की वि शेताओं और संघर्श की कठोरता को भुलाकर दिव्य आनन्द प्रदान करती है। छायावाद ने हमें एक ऐसी ही गहन अनुभूति प्रदान की है जिसके फलस्वरूप छायावादी कवि प्रत्येक जड़–चेतन पदार्थ में एक ऐसे अतीन्द्रिय सौन्दर्य के द नि करता है, जो अत्यधिक आनन्द प्रदान करने वाला है, अपूर्व सरसता का अनुभव कराने वाला है और जिसमें स्थूलता नहीं, अपितु सूक्ष्मता है। इस सूक्ष्म सौन्दर्य का चित्रण करके वह अपनी जिज्ञासा भाान्त करता है और अतीन्द्रिय सुख की अनुभूति में लीन होकर अपार्थिव, अलौकिक एवं अनुपम सौन्दर्य–चेतना में निमग्न हो जाता है। महादेवी जी में भी यही नूतन सौन्दर्यानुभूति विद्यमान है।

महादेवी जी ने अपने काव्य संग्रहों की भूमिकाओं में तथा गद्य रचनाओं में अपनी सौन्दर्य सम्बन्धी धारणाओं को व्यक्त किया है। उन्होंने अपने निबन्धों या भूमिकाओं में सौन्दर्यानुभूति या रसानुभूति का जो वि लेशण किया है उसे सम्भवतः सभी छायावादियों में सूक्ष्म और गहन कहा जा सकता है।

छायावादी कवि चतुश्टय में ’महादेवी जी’ की सौन्दर्यानुभूति पृथकतः विवेचनीय है। उन्होंने काव्य को सौन्दर्य से उद्भूत स्वीकार किया हैं और उसे सौन्दर्यबोध की निधि भी कहा है, किन्तु महादेवी जी ’सौन्दर्य’ को साध्य न मान कर साधन मात्र मानती हैं। कवियित्री ने कला में सत्य और सौन्दर्य दोनों की पुण्य प्रतिश्ठा की है, किन्तु सत्य को अपेक्षाकृत उच्च स्थान दिया है। महादेवी जी का सौन्दर्य सम्बन्धी दृश्टिकोण चूँकि बहुत कुछ आध्यात्मिक है, इसलिए उसमें रहस्यानुभूति का आधिक्य है। उन्होंने सौन्दर्य तथा रहस्यमय चेतना को एकात्म कर दिया है। उन्हें प्रकृति के सूक्ष्म सौन्दर्य में व्यक्त परोक्ष सत्ता का आभास होता हैं। स्पश्ट है कि कवियित्री की सौन्दर्यानुभूति मुख्यतः भावजगत से सम्बद्ध है, आत्मनिश्ठ है और अन्तर्जगत की कल्पनाओं से एकाकार हो गई है। इस सौन्दर्यवृत्ति को उन्होंने ’जीवन की सहजावृत्ति’ स्वीकार किया है, जो एक सुखद अनुभूति है और जो वस्तुओं, रंगों, रेखाओं की वि ोश सामंजस्यपूर्ण स्थिति के कारण अनायास उत्पन्न हो जाती है।

महादेवी जी ने कविता के मनोनीत तत्वों में सौन्दर्य को उच्च स्थान दिया है तथा सौन्दर्य–चेतना की सांस्कृतिक एवं दा र्निक व्याख्या की है। कवियित्री के अनुसार–’’किसी मानव समूह को दूसरे से भिन्न वि ोशता उसके सौन्दर्य–चेतना से प्राप्त होती है। सौन्दर्य चेतना जीवन की सहजातवृत्ति होने के कारण उसी के समान सामान्य और अपने परिवे ा में वि ोश रहती है। व्यापक अर्थ में वह जीवन के सभी क्षेत्रों में व्याप्त होकर उन्हें प्रभावित करती रहती है। परन्तु सौन्दर्य की अनुभूति जितनी सहज है, उसकी परिभाशा उतनी ही कठिन हो जाती है। सामान्यतः वह ऐसी सुखद अनुभूति है, जो वस्तुओं, रंगों, रेखाओं आदि की वि ोश सामंजस्यपूर्ण स्थिति में अनायास उत्पन्न हो जाती है।

महादेवी जी की मान्यता है कि ’संसार की प्रत्येक वस्तु उस सीमा तक सुन्दर है जिस सीमा तक वह जीवन की विविधता के साथ सामंजस्य की स्थिति बनाये हुए है। सामंजस्य की स्थिति के सम्बन्ध में वे कहती हैं कि ’कोई वस्तु विरूप सामंजस्यहीनता के कारण होती है क्योकि प्रत्येक वस्तु उसी अं ा तक विरूप है जिस अं ा तक वह जीवन–व्यापी सामंजस्य को छिन्न–भिन्न करती है।

सौन्दर्य अखण्ड है, प्रत्येक सुन्दर वस्तु एवं भाव–जगत का सौन्दर्य एक ही अखण्ड सौन्दर्य से सम्बद्ध है। विरूपता अस्वाभाविक है क्यौंकि वह सामंजस्य की विरोधी है। सौन्दर्य में स्वाभाविकता है क्योंकि उसमें सामंजस्य के प्रति समरसता है। महादेवी ने आलंकारिक रूप में सुन्दर और विरूप के इस स्वरूप को कुछ इस प्रकार प्रस्तुत किया है–

प्रत्येक सौन्दर्य–खण्ड, अखण्ड सौन्दर्य से जुड़ा हुआ है और इस तरह हमारी हृदयगत सौन्दर्य चेतना से भी जुड़ा हुआ है। पर ‘विरूप’ व्यापक सामंजस्य का विरोधी होने के कारण हमारे भीतर कोई स्वभावगत् स्थिति नहीं रखता। सौन्दर्य से हमारा वह परिचय है जो अनन्त जलरा ि में एक लहर का दूसरी लहर से होता है, पर विरूपता से हमारा वैसा ही मिलन है जैसे पानी में फैंके हुए पत्थर और उससे उठी हुई लहर में सहज है। सौन्दर्य चिर परिचय में नवीन है पर विरूपता चिर परिचय में

साधारण बन जाती है। इस प्रकार महादेवी जी की दृश्टि में सौन्दर्य का स्वरूप व्यापक है जिसकी परिधि में सुन्दर और विरूप सभी आते हैं।

महादेवी जी ने अपनी सौन्दर्य सम्बन्धी अवधारणा में विभिन्न ललित कलाओं को भी उच्च स्थान दिया है। उनके मन में चूँकि ' ौ ाव से ही रंग और रेखाओं से आकर्शण रहा है,' अतः चित्रकला बिम्ब–विधान और तद्गत सौन्दर्य को उन्होंने वरीयता दी है। वे एक साथ ही कवियित्री और चित्रकर्त्री हैं। अतः काव्य को चित्रमय तथा चित्र को काव्यमय स्वीकार करती हैं। यह उल्लेखनीय है कि उनके चित्रों के पा र्व में प्रायः भारतीय मूर्तिकला की प्रतिच्छाया विद्यमान है। सौन्दर्य का यह छायांकन उनकी छायावृत्ति से प्रभावित है। इसके अनुरूप ही महादेवी जी ने छायावाद की छायामयी नारी को आकारबद्ध किया है। इन कलाओं के अतिरिक्त महादेवी जी ने संगीत कला को भी प्रश्रय दिया है। उन्होंने काव्य को मुख्यतः श्रव्यकला कहा है और त्रिमूर्ति जैसी दृश्यकलाओं से उसका सामंजस्य कराया है।

वस्तुतः महादेवी जी की सौन्दर्यानुभूति स्वयं में अत्यन्त प्रभावी होते हुए भी अन्तर्मूक है। इस प्रकार महादेवी जी की दृश्टि में 'सौन्दर्य' काव्य एवं अन्य ललित कलाओं का एक अनिवार्य तत्व है, जिसका बहुत ही ऋजु सम्बन्ध मनुश्य के भावात्मक संवेगों के साथ है। इस सौन्दर्य तत्व के प्रति छायावादी कवि पर्याप्त सचेश्ट दीख पड़ते हैं। महादेवी जी ने भी कविता के मनोनीत तत्वों में सौन्दर्य को बहुत उँचा स्थान दिया है।

महादेवी जी ने सूक्ष्म रहस्यात्मक सौन्दर्यानुभूति को अपना समर्थन दिया है। वे कला के वासनोन्मुख सौन्दर्य का प्रत्याख्यान करने के लिये उसे रहस्यमयी सूक्ष्मता से आवृत कर देती हैं। उनकी यह छाया रहस्यपूर्ण सौन्दर्यावृत्ति स्वयं में वि ाश्ट है। इस प्रसंग में सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि महादेवी ने छायावादी सौन्दर्यानुभूति की सूक्ष्मता का दा निक निदान प्रस्तुत किया है, इनका मन्तव्य यह है कि छायावादी कविता की उपर्युक्त सूक्ष्म सौन्दर्यानुभूति उस सर्वात्मवाद से उत्थित हुई जिसमें जड़ तत्व से चेतन की अभिन्नता रहती है।

egknoh d fopkjk vkj jpukvk e ek l y rFkk LFky lkUn; d lkfr mi{kk dk Hkko vf/kd feyrk है। स्थूलता और मांसलता के प्रति अविरल आकर्षण के काj.k gh egknवी सूक्ष्म–सौन्दर्य की प्रतिष्ठा dk Nk;kokn dh lcl cMh mlkyfC/k eku ldh gA कृष्णप्रसाद गौड़ भी इस सन्दर्भ में लिखते हैं कि ^^egknoh dh jpukvk dh fo"ोषता है सौन्दर्य, जो पार्थिव और मांसल स्वरूप से हटकर बारीक और अन्तर्जगत की ओर दृष्टि ले जाता है। इतना ही नहीं, महादेवी की सारी आराधना सारी पुकार उसके lkfr g] tk Lo; vkn"k g vkj tk lkj llkj d lkUn; dk tUenkrk gA ;gh dkj.k g fd mudh jpuk e lUnjrk dk lkdk"k txexkrk jgrk gA^^

bl lkdkj bUgku lkUn; dk ftl vekly भाव से देखा है, उसकी वैचारिक पीठिका स्पष्ट है। rnuUrj] egknoh u Nk;kokn lkUn;&pruk dh l{erk lkj fopkj fd;k g] D;kfd bud fopkj l fgUnh lkfgR; e Nk;kokn ;x l{e lkUn;kuHkfत के 'जय घोष का काल' है। egknoh th u dfo dh lkUn; pruk vkj Hkkod dh lkUn;kuHkfr dk dfo d thou n"न की पृष्ठभूमि में j[kdj lkj[kk gA dfo vkj Hkkod d vuHkfre; rknkRE; lkj egknoh d fopkj lkfgR;"kkL= e egRoLk.k gA

xk;d dh lQyrk mld xhr dh og lkekU;rk g ftldh Hkko rhork e Jkrk ;k lkkBd vlku सुख–दुःख की प्रतिध्वनि सुनता है। महादेवी जी केक ही शब्दों में, ''सफल गायक वही है जिसके xhr e lkE;rk gk vFkkr ftldh Hkko rhork e nljk dk vlku l[k&n%[k dh lkfr/ofu lukb lkM vkj ;g rc Lor% lEHko g tc xk;d vlku l[k&n%[kk dh xgjkb e Mcdj ;k nljk d mYYkास–विषाद से सच्चा तादात्म्य कर गाता है। वही तादात्म्य रसानुभूति को प्राप्त होता है।

महादेवी जी के कथन से स्पष्ट है कि गीतों में जो आत्मनिष्ठा ;k vkRelkjdrk gkrh g og dfo d 0;fDrxr l[k&n%[k dh rho vuHkfr gkr g, Hkh lc dh lkekU; vuHkfr Hkh gkrh gA rHkh Hkkod Dh vuHkfr d lkFk rknkRE; dj lkkrk gA bl rknkRE; d dkj.k gh og vuHkfr lkUn;kuHkfr cu lkkrh gA

egknoh th u dk0;xr vuHkfr dk dfo dh vkRe dgkuh Lohdkj djr g, dgk g fd& ^^bl vkRe dgkuh e dfo d gn; dh 0;Fkk&dFkk jgrh gA ijUr og lkhMk] og 0;Fkk ;k og pHkku Hkh lUnj g D;kfd dfo dld dk e/kj cukdj 0;Dr djrk gA oLrr% dykdkj rk ,lk thou lxh g tk vlkuh vkRe dgkuh e gn; dh dFkk dgrk g] vkj Lo; pydj lkx&lkx d fy; lkFk lk"kLr djrk g ------------- vkj dkVk pHkkdj dkV dk Kku rk llkj n gh nxk fdUr dykdkj fcuk dkVk pHku dh lkhMk fn; g, gh mldh dld dh rho e/kj vuHkfr nlj rd lkgpku e leFk gA**

अतः महादेवी जी की दृष्टि में सौन्दर्य की आत्मगत सत्ता घटनाओं की तथ्यपरकता में नहीं, अपितु vuHkfrxr lR; e g D;kfd dfo ftl lR; dk vlkuh vuHkfr e th yrk g mlh dk og nljk dk thu d fy, nrk gA

egknoh th dh lkUn; lEcU/kh /kkj.kk dk lEcU/k mldh jgL;kuHkfr l Hkh gA jgL; lno lUnj gkrk gA tk vukoÙk g] v0;Dr ,o vun?kkfVr g mld ifr eku e lgt ftKklk ,o आकर्षण होता है। यही आकर्षण एवं जिज्ञासा का भाव रहस्य को सौन्दर्य प्रदान करता है। महादेवी th u Hkh lkUn;kuHkfr dk vk/;kfRed ,o jgL;kRed ekuk gA lkUn; d ifr bl vfMx vkj प्रचुर आत्मनिष्ठा के कारण महादेवी ने सौन्दर्यानुभूति को सर्वदा रहस्यात्मक माना है। अनेक स्थलों ij 0;Dr fd; x; bud eUr0;k l ;g fl) gkrk g fd lkUn;kuHkfr vfuok; :lk.k jgL;kuHkfr gvk djrh gA

egknवी जी ने मनुष्य की lkSUn;&pruk dk nkgjk ekuk gA ekuo lkSUn;&pruk dk ,d Nkj okg; txr ls lEc) gS vkj nlljk vUrtxr lA blds dkj.k crkr g, dgrh gS fd ^^ekuo dk lkkj okg; txr dk leku ,d lpr vUrtxr Hkh gA vr% mlds lkUn;ckk/k nkgjk vkj vf/kd jgL;e; gks tkrk gA og doy lkfjo"k dk leturL; lkj lklUu ugh gkrk] oju fopkj] Hkko vkj mulk lkfjr de dh letL; lk.k fLFkfr lkj Hkh eX/k gkrk gA mlds vUrxr dk letL; okg; txr dk letL; vUrtxr e vlkuh lkfrPNfo vkduk pkgrk gA

egknoh dk ;g fo"लेषण छायावादी सौन्दर्य–चेतना की आन्तरिक और आत्मनिष्ठा के रहस्य पर lkdk"ा डालता है। इस तरह सौन्दर्य के प्रति महादेवी का दृष्टिकोण पू.kr% vkfLrd] vk/;kfRed vkj jgL;kRed gA bUgku rk lkUn;kuHkfr dh jgL;lkjdrk dk Nk;koknh lkUn; pruk dk fof"ाष्ट y{k.k ekuk gA

lkUn; dk lklx e mnkRrrk lkj fopkj djuk Hkh vlkfjgk; g] D;kfd mnkRr e vkRek dh fo"kkyrk] अनन्तता, शक्तिमत्ता एवं विराटता के द"ku gkr gA mnkRrrk lkUn; dh xfjek dk ,d vfofPNUu vx g] lkUn; dk mUur lkiku gA egknoh u Lo; vlkuh ^nhlkf"k[kk^ dh Hkfedk e उदात्त के विषय में अपना दृष्टिकोण स्पष्ट किया हैं वे कहती हैं कि ''सत्य काव्य का साध्य और lkUn; mldk lk/ku gA ,d vlkuh ,drk e vlhe jgrk g] nljk vudrk e vuUr^(blh d lk/ku d lkfjp; fLuX/k [k.M :lk ls lk/; dh foLe; Hkjh v[k.M fLFkfr rd lkgpu dk de vkuUn dh ygj lkj ygj mBkrk gvk pyrk gA^^

bl lkdkj mnkRrrk lkUn; d f"ko vkj lR; nkuk rRok dk 0;ftr djrh gA vr% egknoh dgrh g fd ^^lkdfr d y?k r.k vkj egku o{k] dkey dfy;k vkj dBkj f"kyk,] vfLFkj ty vkj fLFkj lkor] fufcM v/kdkj vkj mTToy fo|r j[kk] ekuo dh y?krk fo"kkyrk] dkeyrk&dBkjrk] ppyrk&fu"pyrk vkj ekg&Kku dk doy lkfrfcEc u gkdj ,d gh fojkV ls mRlkUu lgknj gA tc lkdfr dh vud :lkrk e lkfjoru"khy fofHkUurk e dfo u ,sl rknkRE; dk [kktu dk lk;kl fd;k] ftldk ,d Nkj vlhe pru vkj nljk mlds lLhe gn; e lek;k gvk Fkk] rc lkdfr dk ,d&,d v"k vykfdd 0;fDrRo dk ydj tkx mBkA^^

;|fi dof;=h u viuh jहस्यानुभूति को लौकिक शब्दावली में व्यक्त करने के लिए उसे लौकिक ie dk gh :lk fn;k g] ij fQj Hkh ,fUn;rk] okluk ,o ppy Hkkoukvk dk m}yu mle dgh Hkh fn[kkbZ ugh nrk] fdUr mudh vuHkfr dk ge ykfdd ie d leku Hkh eku y rk mudk ie vR;Ur mnkRRk ie fl) gkxk] D;kfd mle Hkkx dh pkg] l[k dh bPNk] LokFkh दृष्टि ,o vkun dh dkeuk ugh g cfYd vkReR;kx] cfynku ,o vkfRed feyu dh gh Hkkouk gA og ikjEHk ls vUr rd lo= gh eu dh mTToy] mnkRr ,o ifo= Hkkoukvk ij gh vk/kfjr gA

bl lkकार महादेवी के विचारों से ही स्पष्ट है कि उनकी कविता महान आत्मा की प्रतिध्वनि है। उसमें lkfo=rk g] mTToyrk ,o vykfddrk gA dfof;=h e.ke; /kjkry d mlkj mBrh gA mud Hkkok

dh mnkRrrk lhekrhr xfjek rd lkgpu e leFk gkrh gA egknoh Lo; ;g dgrh g fd dfo dk lR; ekuoh; loxk dk mnkRrhdj.k gh gA ;g mnkRreyd eY;oku Hkkouk mld fy, lUnj gA ml mnkRrhdj.k l मानव–संस्कृति का उत्कर्ष होता है और वही f"ko gAbl lkdkj mnkRr Hkkok dh xfjek l egknoh dh lkUn;&Hkkouk lR;e ,o f"koe l ;Dr gkdj mpkb;k dk N ldh gA

egknoh d vulkj lkUn; dk lc dkyk ,o n"kk e ,d loekU; Lo:lk gkrk g D;kfd mldk lEcU/k ekuo vUr%dj.k dh rflr l g mUgku bl /kkj.kk dk 0;Dr djr g, dgk g& ^oLrr% lkUn; gekj vUr% dj.k dh ,lh rflreyd Lohdfr g tk fo"ष अवस्था में प्राlr gkrh gA blh l lkUn; pruk n"kdky d Hknk d uhp ,d lkekU; vkj lc n"kdyk e Lohdr fLFkfr Hkh j[krh gA इस प्रकार महादेवी जी का स्पष्ट दृष्टिकोण है कि दे"kdky d Hknk l lkj lkUn; dk ,d loekU; Lohdr Lo:lk Hkh g ftld ey e ekuo vUr%dj.k dh ,drk gA

fu"dशk& उपर्युक्त विवेचन में प्रस्तुत महादेवी जी की सौन्दर्य दृष्टि का विवेचन करने पर स्पष्ट होता है कि उनकी कविता का सौन्दर्य–पक्ष सबल है तथा उनके गीतों के प्रति सहृदय के आकर्षण d ey e lkUn;xr eY; fufgr gA egknoh th Nk;koknh ;x dh dfof;=h gA egknoh dh lkUn;&Hkkouk vlku ;x dh lkUn;&Hkkouk dh nu gA mudk dk0;&n"ku rFkk ml n"ku dk dk0;xr :lk nu dh fof"ाष्टता इसका प्रमाण है। mud dk0;&n"ku dk vk/kkj Hkkjrh; vkn"kokn gA mUg thou vkj txr e fLFkr ,d gh v[k.M lR; d lkfr vVV fo"okl gA txr d [k.M&[k.M e v[k.Mrk dk lkkl dju l gh ml lR; dk ck/k lEHko gA thou vkj txr dh विषमताओं में सामंजस्य को देखना ही सौन्दर्य है। अखण्ड सत्य की प्राप्ति के लिए यह सौन्दर्य lk/ku curk gA ;g lkUn; vrhfUn; g] okg; txr dk ek/;e ek= gA vr% egknoh dh सौन्दर्य–भावना सामंजस्यों का परिणाम है। अनेकता में एकता का अन्वेषण तथा विषमताओं में सामंजस्य की दृष्टि ही काव्य की मूल प्रेरणा है।

egknoh dh lkUn;&Hkkouk lk.kr% vkReनिष्ठ है। अतः उनकी अभिव्यक्ति के लिए उपयुक्त :lk&ek/;e xhr gh gA xhr e x;rk dh lk/kkurk g vkj mld }kjk o;fDrd Hkkoukvk dh vfHk0;fDr lgt :lk l gkrh gA lonu"khy dfo&gn; d dkey eeLl"kh mnxkj xhr d :lk e Lor% LQfjr gkr gA mudh lलkषणीयता गीत की टेक की पंक्ति की आवृत्ति से उत्पन्न lxhrkRedrk l vf/kd gkrh gA egknoh lxhr"kkL= dh eeK gh ugh] dk0; vkj lxhr l mRlkUu lkUn; d lkfr lpr Hkh gA y;kRedrk RkFkk uknkRedrk xhr d lk.krRo g] ftul अभिव्यक्तिगत सौन्दर्य का उत्कर्ष gkrk gA egknoh d xhrk e vfHk0;ftr vkRekfHk0;fDr lkdfrd बन गई है। इसका कारण सौन्दर्य के प्रति आध्यात्मिक दृष्टिकोण हैं। उनके अनुसार सौन्दर्यानुभूति jgL;kRed gkrh gA bl nf्टकोण के फलस्वरूप वे सौन्दर्य का सम्बन्ध doy Hkkotxr l ekurh g] vr: उनकी प्रवृत्ति अन्तर्मखी तथा उनकी अनुभूति आत्मनिष्ठ है। सूक्ष्म सौन्दर्य के प्रति आग्रह

तथा वसनोन्मुखी स्थूल सौन्दर्य के प्रति विकर्षण उनके गीतों में स्पष्ट रूप से परिलि{kr gkrk gA उनकी यह सौन्दर्य दृष्टि छायावादी युग की विकसित सौन्दर्य चेतना से उत्पन्न दृषिV gA Nk;koknh ;x&pruk u okl ukUe[kh LFky lkUn; d fo#) fonkg fd;k gA

इस विवेचन से स्पष्ट है कि महादेवी की कविता में प्रेम, वेदना, jgL; ,o n"ku l lEcfU/kr Hkkokuhkfr;k dh lkUn;Ik.k 0; tuk gb gA dfof;=h की सक्रिय सौन्दर्य दृष्टि ने Hkkokuhkfr;k dh bu विविध भंगिमाओं को परखने की सफल चेष्टा की है। उनकी कविता में हृदय को छूने वाली मार्मिक भावानुभूतियों की रमणीय व्यंजना के पीछे कवियित्री की सौन्दर्य विषयक आसक्ति, सजगता ,o lfd;rk fo|eku gA

lUnHk xUFk&

1- egknoh oek % ^nhif"k[kk* (fpUru d dN {k.k)
2- egknoh oek % ^lIri.kk dh Hkfedk*
3- egknoh oek % ^{k.knk*
4- MkO l; i lkn nhf{kr % Nk;koknh dkO; dk 0;kogkfjd lkUn;"kkL=
5- Xkxk i lkn ik.M; % egknoh dk foopukRed x|
6- कृष्ण प्रसाद गौड़ : egknoh vfHkuUnu xUFk
7- egknoh oek % ^lkfgR;dkj dh vkLFkk rFkk vU; fucU/k
8- dekj foey % Nk;kokn dk lkn;"kkL=h; v/;;u
9- सं० ओंकार शरद : महादेवी साहित्य (दृष्टिबोध)
10- egknoh oek % ^;kek* (Hkfedk)
11- egknoh oek % ^ifjdek* (dN fopkj)
12- egknoh oek % vk/kfud dfo] Hkkx&1